

संज्ञानात्मक वसिंगत

मेन्स के लिये:

संज्ञानात्मक वसिंगत अवधारणा, नैतिकता और मानव इंटरफेस

संज्ञानात्मक वसिंगत:

परिचय:

- संज्ञानात्मक वसिंगत की परिभाषा है बेचैनी की वह भावना जो किसी के **वशिवास, दृष्टिकोण, मूल्यों और उसके कार्यों** के बीच आपसी तनाव के कारण पैदा होती है।
- संज्ञानात्मक वसिंगत की धारणा 1950 के दशक में **अमेरिकी संज्ञानात्मक लियोन फेस्टगिर** द्वारा वकिसति की गई थी।
- फेस्टगिर को वशिवास था कि **लोगों को उनके वशिवासां, दृष्टिकोणों और व्यवहारों के सामंजस्य एवं संबद्धता** को बढ़ावा देने के लिये प्रेरति कथिा गया था। ऐसे में जब लोगों में यह भावना वकिसति हो जाती है कि उनके मानसकि सामंजस्य में खराबी आ गई है, तो वे अपनी संज्ञानात्मक वसिंगत को समाप्त करने का प्रयास करने लगेंगे।

परीक्षण:

- फेस्टगिर ने **एक प्रयोग कथिा जिसमें लोगों को एक नीरस, दोहराव वाला** (पेंचों को मोड़ने) काम करना था।
- उन्हें किसी से झूठ बोलने के लिये पैसा दिया गया और फरि उस व्यक्ती को यह समझाने का प्रयास करना था कि कार्य दलिचस्प था।
- फेस्टगिर ने दो समूह बनाए, एक समूह के सदस्यों को छोटी राशकि भुगतान कथिा गया और दूसरे समूह को एक बड़ी राशकि भुगतान कथिा गया। फेस्टगिर ने पाया कि जनि लोगों को अधिक पैसा दिया गया था उन्होंने कम संज्ञानात्मक वसिंगत कि अनुभव कथिा।

संज्ञानात्मक वसिंगत सिद्धांत:

- यह न केवल किसी के वशिवासां और कार्यों के बीच तनाव से उत्पन्न होने वाली असुवधि की भावनाओं को समझाने का प्रयास करता है बल्कि यह भी वशिलेषण करता है कि लोग इस तनाव को कैसे हल करते हैं।

संज्ञानात्मक वसिंगत कि कारण:

बाध्यकारी अनुपालन व्यवहार:

- बाध्यकारी अनुपालन एक ऐसी स्थिति है जिसमें **एक व्यक्ती को ऐसा कार्य करने के लिये मजबूर कथिा जाता है जो उसके वशिवासां के वपिरीत है।**
- चूँकि कार्य पहले ही हो चुका है और व्यवहार को बदला नहीं जा सकता है, वसिंगत को कम करने का तरीका यही है कि व्यक्ती अपने द्वारा कथिा गए कार्यों का पुनर्मूल्यांकन करे।

नरिणयन:

- नरिणयन **अक्सर वसिंगत पैदा कर सकते हैं क्योंकि नरिणयों में एक वकिल्प को दूसरे पर चुनना** शामिल होता है, जिसका अर्थ है एक वकिल्प के नुकसान को स्वीकार करना।

उदाहरण:

- किसी व्यक्ती को एक बड़े शहर में नौकरी का ऑफर मलिता है, लेकिन नौकरी के प्रस्ताव को अस्वीकार करने का मतलब है दोस्तों व परिवार के पास रहना।
- दोनों वकिल्पों के अपने-अपने लाभ और हानि हैं: अगर वह व्यक्ती नौकरी को स्वीकार कर लेता है तो अपने प्रयिजनों से दूर हो जाएगा और यदि नौकरी टुकरा देता है तो शहर में उपलब्ध अवसरों से चूक जाएगा।

प्रयास:

- अधकिंश लोग बड़े लक्ष्यों को ज्यादा महत्त्व देते हैं जिसे प्राप्त करने के लिये अत्यधिक प्रयासों की आवश्यकता होती है।
- लेकिन संज्ञानात्मक वसिंगत तब भी हो सकती है जब कोई व्यक्ती कुछ हासलि करने के लिये बहुत प्रयास करता है और बाद में वही नकारात्मक या अवांछनीय हो जाता है।

संज्ञानात्मक वसिंगत को कैसे हल कथिा जा सकता है?

परिचय:

- ऐसे कई तरीके थे जिनसे व्यक्तियों या समूहों ने अपनी परस्थितियों के अनुकूल संज्ञानात्मक वसिंगतिका समाधान किया।
- व्यक्तियों अपने विचारों को बदल सकता है, अपने विचार और व्यवहार को सुमेलित कर सकता है, अपने व्यवहार को सही ठहराने के लिये एक विचार जोड़ सकता है अथवा विचारों एवं व्यवहार के बीच वसिंगतिको कम सकता है।

■ उदाहरण:

- X एक 25 वर्षीय स्नातक (बेरोज़गार) है जिसने हाल ही में एक राजनीतिक दल का समर्थन करना शुरू किया है।
- वह उस राजनीतिक दल का अनुकरण करता है क्योंकि वह सत्ता में आने पर देश में युवाओं के लिये बेहतर रोज़गार के अवसर और विकास प्रदान करने के उनके वादों में विश्वास करता है।
- उसकी पार्टी चुनाव जीत जाती है। सत्ता में उस पार्टी के पाँच साल पूरे होने के बावजूद रोज़गार के क्षेत्र में कुछ खास बदलाव नहीं आया है और X अभी भी बेरोज़गार है। चूँकि अगला चुनाव आने वाला है, उस राजनीतिक पार्टी के सदस्य फरि उसकी मदद मांगते हैं। ऐसी स्थिति में X क्या करेगा?
 - **X उस स्थिति के विषय में अपनी राय बदल सकता है:**
 - वह अपने पड़ोसियों A और B, जो कांग्रेसियुट हैं, की ओर देखता है। उन्होंने अपनी गली में ही चाय और समोसे की दुकान खोली है।
 - **व्यावहारिक अर्थों में न सही**, लेकिन X ने नषिकर्ष नकाला कि उसकी पार्टी के सत्ता में आने के बाद नौकरियों का सृजन हुआ है। ऐसे में इस स्थिति के विषय में उसकी राय बदलती है और उसके विश्वास की वसिंगतिको कम आती है। इस प्रकार बदले हुए नज़रिये के साथ वह फरि से उसी राजनीतिक पार्टी को वोट देगा।
 - **उस स्थिति के प्रति X अपना व्यवहार बदल सकता है:**
 - वह समझता है और स्वीकार करता है कि जिस राजनीतिक दल का उसने समर्थन किया था, उसके वादे झूठे थे और अब उन पर भरोसा नहीं करने का फैसला लेता है।
 - **X एक और तरह से सोच सकता है:**
 - वह अपनी सरकार की गतिविधियों का विश्लेषण करता है और नषिकर्ष नकालता है कि **भिले ही सरकार नौकरियों प्रदान करने में विफल रही** लेकिन पिछले पाँच वर्षों में उसकी पार्टी के नेतृत्व में, सर्वोच्च न्यायालय, पुलों, सड़कों आदि के निर्माण के रूप में विभिन्न अवसरनात्मक विकास हुए हैं।
 - **अपने राजनीतिक दल के समर्थन को तर्कसंगत बनाने** के लिये वह एक अन्य तरीके से सोचता है और ऐसा करते हुए अपने विचारों एवं व्यवहार के बीच संज्ञानात्मक वसिंगतिको हल करता है। वह अभी भी उसी पार्टी को इस उम्मीद के साथ वोट देगा कि पार्टी अपने वादे को पूरा करेगी तथा अगले कार्यकाल में अपने नागरिकों को रोज़गार प्रदान करेगी।
 - **X वसिंगतिको कम कर सकता है:**
 - वह अपनी पार्टी के सत्ता में आने के बाद अपने देश की स्थितिकी तुलना आर्थिक रूप से गरीब पड़ोसी देशों के साथ करता है।
 - वह पाता है कि **उसके देश में शक्ति युवाओं में से केवल 40% ही कार्यरत** हैं, जबकि पड़ोसी देशों में यह हिससा 30% से भी कम है।
 - इस प्रकार अपने राजनीतिक दल के शासन में दोषों को कम करने (दोष नकालने की प्रवृत्ति से बचने) से उसके विचारों और व्यवहार के बीच वसिंगतिके कारण उत्पन्न तनाव कम होता है।
 - इस प्रकार वह उसी राजनीतिक दल को वोट देना जारी रखेगा क्योंकि अब उसने उस पार्टी का समर्थन करने को उचित ठहराया है।

सविलि सेवक को संज्ञानात्मक वसिंगतिका अनुभव:

- एक IPS अधिकारी जो अहसा में विश्वास करता है या किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाता, उसे जब लाठीचार्ज का फैसला लेना पड़ता है या भीड़ को नियंत्रित करने के लिये पैलेट गन का इस्तेमाल करना पड़ता है तो वह संज्ञानात्मक वसिंगतिका अनुभव करता है।
 - **नैतिक आचरण का सख्त अनुपालन** सार्वजनिक और नज्जी जीवन दोनों में कुछ उद्देश्यों को पूरा करने में समझौते उत्पन्न करता है, जिसके कारण व्यक्तियों के भीतर नरिशा उत्पन्न होती है। कई बार ईमानदार होना भी लोकसेवकों को शक्तिशाली नहिति स्वार्थों के खिलाफ खड़ा कर देता है, जिससे उसके एवं उसके परिवार का जीवन खतरे में पड़ जाता है तथा उसके दमिाग में वसिंगतिको उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है।
 - **विकास बनाम पर्यावरण:** किसी लोकसेवक को उस समय वसिंगतिका सामना करना पड़ सकता है, जब उसे किसी भी विकास परियोजना के लिये जनजातीय आबादी के वसिंथापन पर नरिणय लेना होता है।

नषिकर्ष:

- एक लोकसेवक को **सदैव संवैधानिक नैतिक मूल्यों तथा सेवाओं की आचार-संहिता** का पालन करना चाहिये और संज्ञानात्मक वसिंगतिके किसी भी मामले में सार्वजनिक सेवा के नैतिक ढाँचे के तहत कार्य करना चाहिये।
- जब भी इस तरह की स्थिति उत्पन्न होती है, तो **भावनात्मक बुद्धिमत्ता लोकसेवकों के लिये एक उपचारात्मक उपाय** हो सकती है।

स्रोत: द हट्टि

